

॥ वीं क्रमचा ॥ अथा ॥ १५ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ च्यास मुहुले रीनीद्याला ॥
राजा बोळ वील आला ॥ मणे जे पोतु आससी बो
लला ॥ लोकरा बाय थथी ॥ १ ॥ च्यास ने के ले दडव
त ॥ मणे होई गा जंय वेंत ॥ धरीला गुतर पंथा ॥ सणो
वेगा ॥ चमकेगा ॥ २ ॥ के ली राम स्मरणाचा सांग ॥ १ ॥
ता ॥ जाल जो सेली धरीला पंथा ॥ पाहात जो से पा
चला वदीनाथा ॥ के ले दडवण नारायणाचे ॥ ३ ॥
तव येक देर वीला ॥ राहो थरा ॥ तया सी सखागी
ममरकारा ॥ लेणे टेथीला मस्तकी कर ॥ क्षेम कर

कपुरेचारतो ॥४॥ गेरेशांगीलली रना कल्पता ॥
जेजे वीपली होती कथा ॥ पुढे अहेची त्रकुटीची
आचरता ॥ तरेसी धोपाववी रचामीया ॥५॥ कुपा ॥
१॥ गुपजली मुनीसी ॥ खुण सांगत जाला चारसा ॥
तुवा जाले ही मांच कपवलीसी ॥ लेथी लहे कमाल ॥
॥६॥ त्याही मांच लाच्या पादरी ॥ वट वृक्ष द्वादश
ये जने वीरता ॥ ससुरवा द्या जाली वीची ॥
शारवा पडले जने का ॥७॥ तया वरीर जहोस
वरसी ॥ ती न फुलतया जारसी ॥ पासी ऐका
रचीली ॥ ती घोरसी लोकी ॥ कोको मना ॥ चार
दे मुनी ये लली माधवान काळी ॥ खंय पाक करीप
दरी वळी ॥ पुडुनीया वननाळी ॥ समपी नैवेद्य ॥८॥
करा वैश्वदेव उपारसन ॥ भुलवळी धालुनोरसी ॥
काग वळी दान ॥ करानी सुध अत्यमना वेसे ॥
जिने रसी ॥९॥ बोलावी ली कचनी ॥ जाली लभ
गर्वी गळा कडुनी ॥ अरल जवरी पंती सधे मुनी ॥
करी अरोगणापे ॥१०॥ पचिरानो ली नवेळी ॥ ज
ली लनसे लये काळी ॥ लरी आंन टाकुनी याजळी ॥

(मुश्चे करुणापनि ह्मणे ॥ १२ ॥ मग वैसे जे लकी ॥
 ते से करी प्रतीदीनी ॥ पुवाले थे जावोनी ॥ आलीत
 २॥ रापे वृक्षारवाली अजयावो ॥ १३ ॥ उवालीत जे हे सुग २॥
 दोनी ॥ पाचारीत ये च न होनी ॥ तीसरीयाची परीसो
 नी ध्यनी ॥ जे हे पुवासावो ॥ १४ ॥ ने मुनी वृक्षार
 वी ॥ पुजा करती ॥ ते शोडशोप चारी ॥ उरोगा पति
 ३॥ आवसरी ॥ उगलाची वेलो ॥ १५ ॥ ते ह्मणे क्शी ३॥
 आपोरान ॥ मुह्मि सांगाची ॥ अशुती कामना ॥ ने
 (उनीयाची शकु ॥ भुचना ॥ मागुले ये थे आणावो ॥ १६ ॥
 वीक्रमचा प्रा ॥ १७ ॥
 इलिका उपदेशा केला ॥ चोरा थोर जे न दंला ॥ मग
 ३९॥ गुराने दीधला ॥ दुयक म सादु ॥ १७ ॥ हा ज्ञाय
 लु भक्षीत ॥ याचे नाव आमर कंद ह्मणाला ॥ पुं
 पहोईल तुला मनोरथ ॥ ये रामा थाटेची चरणा
 चरी ॥ १८ ॥ मग ले धुनी नीघाला ॥ हो मोचक पर्व
 ल पावला ॥ वर वृक्ष नयनी दे रवीला ॥ पत्री फली
 मे जीला ॥ १९ ॥ बुडाचा फार वीस्तार ॥ तेथे गुह्य
 पे करी वैसे करार ॥ तव दीवस जाला दे नम
 ह ॥ पक्षी चारावो उनी आलो ॥ २० ॥ केले सध्या

(1)

३॥ वसुधा कुंभे धीरवरायो ॥ तव च्याप मने मी ३॥

येक जालील आसे ॥ २२ ॥ पक्षी ये जेष्ठ पुत्रा
पारवीला ॥ ते जे पक्षी चरी उचलानी नेला ॥ रो ॥
उर उप च्यापी पुजलीला ॥ अहंकरानी ॥ २३ ॥

आनवाडी होस कांता ॥ ब्रह्मर्षि होस होय
सोडीला ॥ सम पुनी चो मंगुमा ॥ आपोशन
खेलली ॥ २४ ॥ च्याप नव आपोशन ॥ पक्षी के
री वी इन्नापना ॥ एक काय आसे आरना ॥ तेक

री म ॥ शिव ॥ २५ ॥ च्याप राखणे चीत्र कुठान्याये ॥
मागुलीयेथे आणावो ॥ रिलुके वचन आंगिका
राये ॥ आणीक नाही कामना ॥ २६ ॥ होस मने

गाहे श्यम आहे कारण ॥ प्रजा ले पुज चीत्राक
टावे न ॥ आले दोरी आपोशन ॥ हे वचन म

स्व सत्या ॥ २७ ॥ नग आपोशन धेवा जे हाता ॥ च्या

सत्र सुवरी जे वील ॥ आचवोनी धीउा धेलला ॥

मगसंगेसमुद्धताला २८॥ ऐनीकमतीले
रात्री॥ उदयोपावलागभस्ती॥ होसहसेपुत्रा
प्रली॥ कोणअ॥ जीरचगिरीजातअसे॥ ३८॥
५ मीजातोस्वपीतलेजेष्ठपुत्र॥ होसहसेगाचारा
रपीनेरिसांगाते॥ नामुताअणावायेथे॥ ३९॥ सेणे
४॥ बिसेवीलेष्टुष्टीचरी॥ उडाणकेलेअ॥ लरी॥ च॥
३॥ कुरपावलासहसा॥ लथेउत्तरलाचारा॥ ३९॥
राजहोसस्यगिचातलापुढाहा॥ हजेमीयेर
नफारोत॥ पार॥ तवतवा॥ आवलोकोनीनगरा॥

॥ वीकसंचाप्र॥ ३९॥
येथेवाटमासीपाहवी॥ ३९॥ लो॥ उ॥ नीगलावा
तगता॥ हानी॥ द॥ नगरा॥ सभावलेआसेपा
हात॥ हाटहाटवदीयाचोवारे॥ ३९॥ चारा॥ जवत
५॥ दरी॥ जना॥ तवत्यासीनाहीचेलना॥ टकमकापा
हालीयेकमेकाचीवदने॥ परीसखनाहीशरीरी॥ ३९॥
वेवसावकरीतहोपेआपुताले॥ येकउभेयक
बेसले॥ देतद्यंताकरउचलीले॥ तेलेसीचीअ
सली॥ ३९॥ येकहोलेभोजनकरीता॥ मुरबिहा
लेग्रा॥ स॥ घालीलो॥ आरचीयाहोता॥ अ॥ नवा

४१॥ ॥ हे भूमीले वे सलीत रस पै ॥ ३६ ॥ ये कृष्ण
 धर का मातुर ॥ आ पुले टार हो लस वरा ॥ आंष्ट
 मये ककारा ॥ तसेच उभयला आसली ॥ ३७ ॥
 - हे शर उरा टरा ही पगड या तरी ॥ आपुला ले
 कार्य स्थोली ॥ जे जयाची होती वली ॥ ते तसे
 चमै न राप ॥ ३८ ॥ तैसे पा हो चाली ला पुढारा ॥
 ४२॥ आला मध्ये वाजारा ॥ तेथे देखील त्या आपस
 रा ॥ नृत्य लेंडयी उभया आसली ॥ ३९ ॥ तसे
 काचे देखोनी सख मंडा ॥ वाराने आदरी लावी
 नो ६ ॥ ये काचे करुनी ॥ ४० ॥ ये कावरी लोदी म
 आसे ॥ ४१ ॥ व्याप्याची गचा वरी वजरी गले
 पोली राकी दुका ॥ बहरी ले ला मुपचि घर चु
 र्ण करी ॥ चारीयाची लुगडी हारीची त्रयीची त्र
 ४२॥ नाना परोची ॥ ४३ ॥ पुढे गेलो नाना बटी सी ॥ हे
 रची ला ॥ ४४ ॥ आरासी ॥ त्या ये का आये का
 सी ॥ टाकोत आसे पै ॥ ४५ ॥ तव हे रची ला वु
 के करी मा ॥ धावोनी उद्यडी पटीय ॥ आंगी प
 री मळ चर्चुनी या ॥ दाळी सुमन माळा ॥ ४६ ॥

लेथुनीया नी धाला ॥ माहाइरा पावला ॥ दारीदार
पाळ बेसला ॥ तो तो रुनी दी धला पली कोडा ॥ ४४ ॥ ६ ॥
५ ॥ नी तरौ ज वरी धाला ॥ ल वर नी या सी हेर वला जा
ला ॥ कोणी नी हीर कोणी बेसला ॥ जालोला
वण्य सुहरा ॥ ४५ ॥ लेथे दण येक के लीर जी को
७ ॥ फा चे चुबनः को फा चे य व न चो जी ॥ को फा सी
ये द न परी म जी ॥ को फा चे य व न चो जी ॥ लेथे क
मी लि ये क द प ॥ पटे हेर यो ले उल म भुवन ॥ ची न
वी ची न ल ग ट ल वणी ॥ ही रे मा णी के ज ड ली जाली ॥ ४६ ॥

॥ वी क म चं ग प्रा ॥ ४७ ॥
त्या म ही रा नी तरी म म च कु धा ल ला ॥ जाले कु सरी
रले ज ड ली जाली ॥ नी न ना परी ॥ रुप ली गु ल म ॥
॥ ४८ ॥ पा सो ज ॥ १ ॥ नी री ली या च ॥ चो द वा व धं ला
७ ॥ जाले व व मा सी च ॥ ज डी ल ल र य ल र वी कु द नो
८ ॥ च ॥ ल वी ला यो रा मु ला फ ला च ॥ ल वी ल
को नी ॥ जाली चारी र म या ॥ चे पा या नी
न मारी पु ल जी य ॥ रो द ही दे ला ली पो ट कु जी य ॥
जाले पु ल पा र च ई छी करानी या ॥ ४९ ॥ नी या
कडे द ही जाले स ली ॥ त्या च्या मे र म दी का वा

नीली। मधे नीहा सुवनी। स्त्री। ते नी। नी। नी।
७॥ लो आसे। ७॥ तीस पाधरणी। क्षीरोदक। ७॥
लो अ। राने उद्युती। माल। का जीक। (अवलो
की धो। र धरनी मलक। (मने को गे का। लाव
प्ये। स्वरापाचो पट्य। थोर वीधा। तीय। सी। ज। ले
७॥ आसली कट्य। (आवधी सुंदर मे क। उनी ये कव
र। हे धउली। आ। से बर वटा। (से मज गत लसो।
॥४३॥ जैसे रीचे स्वरापा। ते से चय अंद कनेचे
स्वरापा। (का ही धउ। आउत हे आप। हे यथा धीना
जावे। ॥४४॥ चोनी। लुग जी। तु १३ चो स्वर। का
सदा। (ती आसे बल कटा। ललारी आसे कस
री मल वटा। चदनी तांबो कसुंग। ॥४५॥ हे रीपा
४५॥ ही ती आवधी सुवणी। पुनरपी धा। लै पाधराणा।
बर वेसा की ले कर चरण। मगनी धा। ला मंदीरा
बा हीरी। ॥४६॥ चो। ती ल। दुसरी या बा। जरे।
दो ही भागी मा जी यागे पुर। लेथे वेस ले आस
ली वे व्हारे। अस पु। ला ती परी वारे सी। ७॥

कोणी बेसले आसली श्रीयारमवेला। लांबोठ
८। धीजीय बिक मेका देला। येकी अंगी चंदन लवणी ॥
ले। करपली येक च्यात्री रेवनीया ॥ ८८ ॥ येकी
करीली अपरण हिला व। येकी केले आसे राय
९। येकी भया आसली लाटा धरणा पुराटा
करी धरणी वोढी लाती ॥ ८९ ॥ ऐसा वी अपरवी
नादा पाहीला सकळ नगरीचा भेद ॥ रजीया के
लीया येका सोरवेद ॥ मग नगरी वाहिर आला ॥ ९० ॥
ओले सपली येक जाहेगा परसणे की नगरीनी
१०। वी वक्रपापा रावेत नि कवी बांजी रे चारोला
वीक्रम चो ॥ ९१ ॥
परीतपचेन चालेचा ॥ ९२ ॥ लेसो कोनो कवी श्र ॥
११। हमणे वावे पुरनीले प्रसंग ॥ लायाण कंदरिओ रआ
नंद पैलाला ॥ ९३ ॥ हमणे परी येसा जी येक चौत ॥
चीत्रागी अपजीवनगर जीला ॥ सकळ जनातीचे
सत्य ॥ दुसरा भाव जाला जीना ॥ ९४ ॥ ती सरिंद्र १२
आपनाला नीकडी ॥ हमणे वोनी देहसाडीला
राडी ॥ जनराहाट होला फरवडी ॥ लेराती ये गुणि
ली ॥ ९५ ॥ जैरा ॥ क्रछा ॥ दापारी ॥ नीले वरणी वी
धीला १३ ॥ लुकातीरी ॥ वोला उपरवीले आवस्थ ॥

पुडुचीये कुमरा ॥ ६५ ॥ धर्महारन नरपुरी राही
पात ॥ अर्जुन पाहावया धागे ला ॥ जालमत्र ५॥
पदेशके ला ॥ जे आधार ने दावा करणा सी ॥ ६६ ॥
अर्जुन आता भातु को तीथी ॥ आलीची क
लदे रवी ले करण नाथा ॥ दुरये होय रादन करीला ॥
पीटी ल लाटाले ॥ ६७ ॥ गुडबडा आसे लोख ला ॥
जव की बोलावी ले करण नाथो ॥ नावे के दरिगाहा
ला ॥ गुरोनी बैस ला हो रीता ॥ ६८ ॥ लो अर्जुन राव्य
नये जीती ॥ देव ये ईका कलती ॥ हजे म्यारक्षी
काररी कोणे कोणे मती ॥ आंती आधार होसी ल
हण चोनीया ॥ ६९ ॥ अर्जुन ये पुडुनायक ॥ तुनू को
ये गुआहा भयंकर का ॥ धनु राचा लही दे रिका ॥
आंधिनी मीरय प्रमाणा ॥ ७० ॥ कीरी टी दे धनुरा
गुण हाती ॥ हारी ने हारी त्मा सर्व राकी ॥ प्राण रा
की ला खरी लीगा ॥ गे ला वी ॥ ७१ ॥ पां
दे वं जाले नी सखी ॥ करण गे ला खग प्रिती ॥
मग आंल पुर वी भां डी मी ॥ ले आर्जुन पाहात
ये ॥ ७२ ॥ आमा आर्जुन राये का ही न चले ॥ ले
से चयाचे सखची ॥ आगी ने नेले ॥ चार ने जे के

तनीद्यालोसणीतलो॥ येरीनेलीपुकेवली
११ हो॥ अतापुठ नसांगे॥ सपवोनीया॥ ८१॥ १२
ओलेसपंतीसांगतासांगता॥ वलीलेकोयनी
मीत्यता॥ कचोसपेदेकादे॥ उनीचोलातेहीसां
गेनलुसंसी॥ ८२॥ संपुर्णहेकलादरणी॥ शुभा
पहोरेलेसतदरणी॥ अथारकदुलारेसपवोनी
यासीसुखदीधलेपाहीजे॥ ८३॥ य॥ लागीन
पुरसेपुटीलयेलातु॥ पुरकावाकामनागाचा
आथु॥ ईलकी॥ वीचपावोपरमाथीपुठकाय
करीलीजिहाली॥ ८४॥ अगबोलेउपारवीलेव
क्रंदलासी॥ सपलेमलावावेचरासी॥ आ
कसरहीलेयेगीरी॥ पुटीसुनपवरा॥ ८५॥
१३ पहिलीचजालीहेलीरनामोमी॥ लमकाजी
लेवेगी॥ रासीमीजोनीमथायोगी॥ लमकाली
कदुधस्यमीये॥ ८६॥ आजीमुहुलीआसे
जीनपेदं॥ संपुर्णआसेजीप्रतीपदा॥ नोवरा
नोवरीसीलाचावीहारीद्रा॥ हेसेदीजबोली
लो॥ ८७॥ राजप्रधानासीसांगेपरवडी॥ लुली

१२॥ फावे जीने वज्याचे वहाडी। करनीय। लातरी।
हाळदी वेगी लावावी। ८८॥ प्रधानेने लेखासली।
हाळदी लावी ली गजरे सी। राजगही कुमारी १२॥
सी। कोरा हाळदी मो होखावो। ८९॥ ऐसकर्मले
१३॥ हकी नदी वस। देवक पुजा चलो धीसि। येरे दीव
सी ददी कावीस। ल ग ल गे रा वर स मरी ९०॥
थोर जा लाजा नंदु। व ज ल र चये क नो दु।
ब्राह्मण की सी म त्र राध्या। लो की धी बोली ला
हो ला। ९१॥ अर ये क म ली ज न। दी व स। लो उ
जा ले य था य। व का गे। य ध गे दी ध ले जा वा
वी क म च। ९२॥

१३४॥ यांस। आ धी रा ज्य उनी प भोग व म र स। ९३॥
च्य ला आ पी रा ज्य क नारी। नांद ती व र वी ये प री।
जरी सोंगे रे स वी र री। वृथा गंध वाढ वा वा। ९४॥
उत्तर सी र स क ल स प द। सुख स भोग स ना हो
म थ दि। ९५॥ हारी भती चार री। प र स दा। ना ही
नी दु। कोणा ची। ९६॥ ऐस कर्म ले व हा ल दी व स।
जा ली प्री ली दो धा स। मनी आ ट ये ले ची त्रं गी
सां क री ली जा ली ची त्र क हा ज व या स। ९७॥
म ग कोणी ये के दी ना त री। दो ये उत्तर सी सुख

१३॥ सो जारी नात्री च आवर्यरी वा लपिसे
 रत्नेची वकुरीची ॥ ९८ ॥ सागुपुटी लक्ष्मी १३॥
 १३॥ सवीरारी ॥ मनेमी प्रवेशात्ते मंदीर ॥ लवमच
 की ॥ पुहु उली आरे सुंदर ॥ मगमी जवळी गेली ॥
 ॥ ९९ ॥ चार व्यासे सांगत ॥ बीत्रांगी आस्पेह का
 ॥ १०० ॥ रदेल ॥ सवर्ण परी सोनी पावता ॥ सांजी लो प्रा
 ण लीने ॥ १०१ ॥ आरामने सिलंगली नीद्रा ॥
 मगवोनी कवी थापटी नी कर्तें सावध ॥ सवर्ण
 पीले आसे दोर नी द्याये ॥ उकचळले आसे
 शरीराचे ॥ १०२ ॥ मग उले मग जवळी जेनी ॥ मग
 कैली दीर्घधर्मी ॥ कायगर्जला लास पवो
 नी धावला वक्रदल ॥ १०३ ॥ आरामने रवरी स्त
 रा ॥ द्विष्टि पोंहु पयरा ॥ हाहाकार केला थोर ॥
 १०४ ॥ राणी मुख कानीया ॥ १०५ ॥ करीली माहारा
 का ॥ यिका परी सयक आधीक ॥ मोळले सोयरे
 सकळी का ॥ शोक कोली मग नी वणचि ॥ १०६ ॥
 हा सकळ आवध ॥ मृत्यु लोक ॥ नाया मय म
 ग जवळी का ॥ धावोनी गेलीया ॥ जवळी का ॥

काहीचलेथेनदीसो॥१०३॥हमपवेमो
 गृथांरनीनकरावा॥कसम॥करीलेतलेआ
 नीरपवरकारा॥च्य॥रकरीक्रीया॥पारा॥बारा
 तेरादीवसलेटळे॥१०४॥चीत्रांगीचाप्राणनी
 द्या॥ला॥सोचीत्रकुरापवला॥आपलेस्वकु
 डीससंचरला॥जेनजरातंसंजीवा॥१०५॥
 आपलात्पावेवसायातो॥अधर्मजिळेचा
 तळवीला॥चरानेवरीपंडीलेहोतो॥लेवोळर्या
 सीयेकमेका॥१०६॥मारेगुजेसुणवोनीरिपळरी

केराधरणी॥सांगतीचीबागीलुगुनी॥लेकरी
 व्यायनीती॥१०७॥कधीलनागीलेवीआरा॥ले
 पत्नीयेकआलाहो॥१०८॥सकललेजेआन्यायेके
 लाधोरा॥येकायेकालावीले॥१०९॥चीत्रांगी
 करीसमाधान॥जनचि॥देववीजेअसेजयाचे॥
 रिपुकेकलव्यचीत्रकुरीचो॥जालआरिका
 कान्यनपुरीकायकरीआरा॥११०॥मगधनलाजा
 लावकंदलाले॥मोजारनिष्ठापुत्मात्येग्रामाले॥
 राजावीनवीआदरेवहला॥दुसरीनजेकन्याउरांगी
 कारकराथी॥१११॥देईनआर्धराज्यसपनाकावमजा
 यपेधउत्तरकलपुन्यआणीपुराराथी॥११२॥चा

राक्षसे ह नये ड संवधा ॥ मजनाही श्रीये जीभा ॥
स्ता ॥ आजी न लगे राउप आया ॥ चोड नाही
कातीयाची ॥ ११२ ॥ पुन्हा न क देत हणे कने
चेदुरवये करुणे ॥ तुलजा ता हो रित रात गुणे ॥
हि लशे ऐ सेन करावो ॥ ११३ ॥ लोना जार के जीने ला ॥
रावो आली दुरवसि प वना ॥ पुढे काय वता ॥ तज्जा
त्ता लो सांगे हारी दल ॥ ११४ ॥ प्रा ॥ ११५ ॥ संपुर्ण
मस्तु ॥ श्री कृष्णार्पण मस्तु ॥ ४॥ ४५ ॥ ४६ ॥





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com